Computer Proficiency Certification Test

Notations :

1.Options shown in green color and with ✔ icon are correct.

2.Options shown in red color and with ✖ icon are incorrect.

Question Paper Name:	Remington Gail 23rd February 2020 Shift 2 T1
Subject Name:	Remington GAIL
Creation Date:	2020-02-23 17:14:10
Duration:	25
Calculator:	None
Magnifying Glass Required?:	No
Ruler Required?:	No
Eraser Required?:	No
Scratch Pad Required?:	No
Rough Sketch/Notepad Required?:	No
Protractor Required?:	No
Show Watermark on Console?:	No
Highlighter:	No
Auto Save on Console?:	No

Mock

Group Number :	1
Group Id :	2549892333
Group Maximum Duration :	10
Group Minimum Duration :	10
Show Attended Group? :	No
Edit Attended Group? :	No
Break time:	1
Mandatory Break time:	Yes
Group Marks:	0
Is this Group for Examiner?:	No

Hindi Typing Test

Section Id :	2549893365
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0

Sub-Section Number:	1

Sub-Section Id:	2549893378
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 1 Question Id : 25498938104 Question Type : TYPING TEST

एक बार की बात है, अकबर और बीरबल शिकार पर जा रहे थे। अभी कुछ समय हुआ था कि उन्हें एक हिरण दिखा। जल्दबाजी में तीर निकलते हुए अकबर अपने हाथ पर घाव लगा बैठा। अब हालात कुछ ऐसे थे कि अकबर बहुत दर्द में था और गुस्से में भी।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Standard
Keyboard Layout: Remington
Show Details Panel: Yes
Show Error Count: Yes
Highlight Correct or Incorrect Words: Yes
Allow Back Space: Yes
Show Back Space Count: Yes

Actual

Group Number :	2
Group Id :	2549892334
Group Maximum Duration :	15
Group Minimum Duration :	15
Show Attended Group? :	No
Edit Attended Group? :	No
Break time:	0
Group Marks:	0
Is this Group for Examiner?:	No

Hindi Typing Test

Section Id :	2549893366
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0

Sub-Section Number:	1
Sub-Section Id:	2549893379
Question Shuffling Allowed :	No

Question Number : 2 Question Id : 25498938105 Question Type : TYPING TEST

प्रगति के पथ पर चलते हुए यदि दूसरों का सहयोग मिल सकता है तो उसे प्राप्त करने में हर्ज नहीं। सहयोग दिया जाना चाहिए और आवश्यकतानुसार लेना भी चाहिए। पर इस तथ्य को ध्यान में रखाना चाहिए कि हमारी मूलभूत आवश्यकता हमें स्वयं ही पूरी करनी पडती हैं दूसरों के सहयोग से तो थोडा ही सहारा मिलता है। अपनी आंखे ने हों तो दूसरों द्वारा प्रस्तुत किये गये प्रकाश-उपकरण अथवा सुंदर दृश्य निरर्थक हैं।अपना पेट खराब हो जाय तो दूसरों द्वारा प्रस्तुत सुंदर व्यंजन कब स्वादिष्ट लगेंगे. कान बहरे हो जाये तो किसी के सदुपदेश अथवा गीत-वाद्य अपना कुछ भी प्रयोजन सिद्ध न कर सकेंगे। विक्षिप्त मस्तिष्क के स्नेही स्वजन भी पशुवत आचरण करते प्रतीत होते हैं। अपनी विकृतियां समस्त संसार के सुखद साधनों को दुख-दारिद्रय से भरकर रख देती हैं।दूसरों का सहयोग भी ऐसी दशा में अवरूद्ध हो जाता है।यदि वह मिले भी तो उससे लाभ उठा सकने की स्थिति नहीं रहती। वाह्य सहयोग को आकर्षित करने और उससे समुचित लाभ उठाने के लिए यह नितांत आवश्यक है कि अपनी निज की मन:स्थिति सही और संतुलित हो। इसलिए प्रथम महत्व दूसरों का नहीं रहता, अपना ही होता हैं। दूसरों के सहयोग की आशान करने में उससे लाभ उठाने की बात सोचने से पूर्व आत्म-निरीक्षण किया जाना चाहिए कि हम सहयोग के अधिकारी भी हैं, या नहीं, कुपात्र तक पहुंचने के बाद विभूतियां भी बेकार हो जाती हैं। पत्थर की चट्टान जल-प्रवाह में पडी रहने पर भी भीतर से सूखी ही निकलती हैं। मात्र बाहरी सहयोग से न किसी का कुछ काम चल सकता है और न भला हो सकता हैं। दूसरों का सहारा तकने की अपेक्षा हमें अपना सहारा तकना चाहिए। क्योंकि वे सभी साधन अपने भीतर प्रचुर मात्रा में भरे पडे है, जो सुव्यवस्था और प्रगति के लिए आवश्यक हैं। यदि सूझ-बूझ की वस्तुस्थिति समझ सकने योग्य यथार्थवादी बनाने की साधना जारी रखी जाय तो सबसे उत्तम परामर्शदाता सिद्ध हो सकती है। शरीर-विज्ञान और मनोविज्ञान के ज्ञाता आश्चर्यचकित हैं कि विशाल ब्रह्माण्ड की तरह ही इस छोटे से मानव-पिण्ड में भी एकसे एक बढकर कैसी अद्भुत क्षमताओं को किसी कलाकार ने किस कारीगरी के साथ संजोया है। कोशिकाओं और ऊत्तकों की क्षमताओं और हलचलों को देखकर लगता है कि जादुई-देवदूतों की सत्ता प्रत्येक जीवाणु में ठूंस-ठूंस कर भर दी गई हैं। कायिक-क्रियाकलाप और मानसिक-चिंतन-तंत्र किस जटिल संरचना और किस संचरण, संतुलन का प्रदर्शन करता है। उसे देखकर हतप्रभ रह जाना पडता हैं। पिण्ड की आंतरिक संरचना जैसी अद्भुत है, उससे हो सकने की भरी पडी है। मनोबल का यदि सही दिशा में प्रयोग हो सके तो फिर कठिनाई नहीं रह जायगा। अस्त-व्यस्तता और अव्यवस्था ही है, जो हमें दीन-हीन और लुंज-पुंज बनाये रखती है। दूसरों का सहारा इसलिए तकना पडता है कि हम अपने को न तो पहचान सके और न अपनी क्षमताओं को सही दिशा में, सही रीति से प्रयुक्त करने की कुशलता प्राप्त कर सके। शारीरिक आलस्य और मानसिक प्रमाद ने ही हमें इस गई-गुजरी स्थिति में रखा है कि आत्म-विश्वास करते न बन पडे और दूसरों का सहारा ताकना पडे। यदि आत्मावलंबन की ओर मुड पडें तो फिर परावलंबन की कोई आवश्यकता ही प्रतीत न होगी।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted
Paragraph Display: Yes
Evaluation Mode: Standard
Keyboard Layout: Remington
Show Details Panel: Yes
Show Error Count: Yes
Highlight Correct or Incorrect Words: Yes
Allow Back Space: Yes
Show Back Space Count: Yes